Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

दशपुर नगर
(कुमारगुप्त और बन्धुवर्मा के मन्दसौर अभिलेख के विशेष संदर्भ में)

बीज शब्द :

अभिलेख, उत्खनन, नगरीकरण, व्यापारी, व्यवसाय, श्रेणी।

प्राचीन दशपुर नगर (आज का मन्दसौर) का, मध्य प्रदेश के मालव अंचल में, शिवना नदी के तट पर अवस्थित होने का उल्लेख मिलता है। शिवना नदी के दोनों तटों से उत्खननों के परिणामस्वरूप प्राचीन बस्तियों के अनेकश: प्रमाण मिलते हैं। इस परिक्षेत्र से पाषाण काल से आज तक के सांस्कृतिक सातत्य का प्रमाण व्यवस्थित रूप से मिलता है। वत्सभट्टि द्वारा विरचित मन्दसौर अभिलेख से समग्र दशपुर नगर परिक्षेत्र की भौगोलिक एवं नगरीय व्यवस्था का भान होता है। प्रस्तुत शोधपत्र में दशपुर नगर के नगरीय परिप्रेक्ष्य का, वत्सभट्टि द्वारा रचित मन्दसौर अभिलेख के विशेष आलोक में वर्णन किया गया है।

*****

सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं सस्कृति विभाग,
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
E-mail : mishrasubodh389@gmail.com

दशपुर नगर
(कुमारगुप्त और बन्धुवर्मा के मन्दसौर अभिलेख के विशेष संदर्भ में)

पश्चिमी भारत तथा मध्यप्रदेश क्षेत्र के प्रमुख नगरों में दशपुर की गणना की जाती है। यह गुप्त और गुप्तोत्तर काल का एक प्रसिद्ध नगर था। इसके नगरीय स्वरूप तथा जीवन का बड़ा ही रोचक विवरण कुमारगुप्त और बन्धुवर्मा के मन्दसौर अभिलेख में उपलब्ध होता है। इस प्रकार का मनोरम और काव्यात्मक रमणीय विवरण अन्य भारतीय अभिलेखों में बहुत कम मिलता है। इस अभिलेख के अनुसार यह नगर पृथ्वी का तिलक अथवा अग्रणी था।[1] गुप्त शिलालेखों में पृथ्वी शब्द का प्रयोग बड़ा महत्व रखता है तथा इसके पर्यायवाची शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।[2] पृथ्वी को जय[3] और साम्राज्य[4] का द्योतक माना जा सकता है, जिनकी रक्षा, जय और उद्धार गुप्त शासकों का परम कर्तव्य माना गया है। उदयगिरि का अभिलेख और महावराह का अंकन इस तथ्य का बड़े ही सार्थक ढंग से उद्घाटन करता है कि शकों का उन्मूलन कर गुप्तों ने पृथ्वी का उद्धार किया। यह तथ्य गुप्तकालीन वराह-प्रतिमाहों की बहुलता तथा मालवा क्षेत्र में उनकी विशिष्ट प्रतिमाओं से स्पष्ट होता है। इस प्रकार दशपुर के लिए 'भूमि का तिलक' विशेषण का यह अर्थ लिया जाना अधिक उपयुक्त लगता है कि दशपुर गुप्त साम्राज्य का अग्रणी नगर था तथा समकालीन राजनैतिक, धार्मिक, व्यापारिक, व्यावसायिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था।

नगरों के उद्भव और ह्रास को मूलरूप से व्यापार के इतिहास से सम्बन्धित माना जाता है।[5] प्रोफेसर रामशरण शर्मा ने 140 उत्खनित स्थलों के उत्खनन प्रतिवेदनों के आधार पर यह मत प्रतिपादित किया है कि कुषणोत्तर काल से भारत में नगरीय ह्रास के युग का आरम्भ हुआ।[6] इसका प्रमुख कारण गुप्तकाल में विदेशी व्यापार का ह्रास है। सन् 550 ई. तक भारत पूर्वी रोमन साम्राज्य के साथ थोड़ा बहुत व्यापार करता रहा। भारत रोम को मुख्यत: मसालों और रेशम का निर्यात करता था। 550 ई0 के आसपास पूर्वी रोमन साम्राज्य की जनता ने चीनियों से रेशम पैदा करने की कला सीख ली। इससे भारत के निर्यात-व्यापार पर बुरा असर पड़ा। छठीं शताब्दी ई0 के मध्य के पहले ही विदेशों में भारतीय रेशम की मांग कमजोर पड़ गयी थी। पांचवीं शताब्दी के मध्य में रेशम-बुनकरों की एक श्रेणी (गिल्ड) पश्चिम भारत स्थित अपने मूल निवास स्थान लाट को छोड़कर मन्दसौर चली गई। उन्होंने अपना मूल व्यवसाय छोड़कर अन्य अनेक पेशे अपनाये।

अभिलेखीय साक्ष्यों और उत्खनन-प्रतिवेदनों के आधार पर दशपुर को गुप्त और गुप्तोत्तर काल का समृद्धशाली नगर निरूपित किया जा सकता है। लाट प्रदेश से आने वाले शिल्पी केवल वस्त्र बुनकर थे। लीट के अनुवाद से ध्वनित होता है कि दशपुर में बस जाने के बाद उन्होंने विविध व्यवसाय अपना लिए। इस आधार पर दिनेश चन्द्र सरकार ने यह मत प्रस्तुत किया है कि पश्चिम भारत में जातियों का स्वरूप रूढ़िबद्ध नहीं था किन्तु पंक्ति 3 में ऐसा कोई शब्द नहीं है जिससे यह प्रकट होता है कि आने वाले लोग केवल पट्टवाय थे।[8] लाट से आगे आने वाले लोगों को मात्र 'शिल्पी' कहा गया है।[9] इस आधार पर परमेश्वरीलाल गुप्त का मत है कि आने वाले लोगों में अनेक वर्ग के शिल्पी थे। उनमें एक वर्ग अथवा श्रेणी पट्टवायों का था, जिनका उल्लेख पंक्ति 16 में हुआ है, जिन्होंने दशपुर में मंदिर का निर्माण करवाया था।[10] इसी प्रकार पंक्ति 9 में विविध व्यवसाय करने वालों की चर्चा है, इसमें ऐसा कोई शब्द नहीं है, जिससे ऐसा ध्वनित होता हो कि लाट विषय से आने वाले शिल्पियों ने अपना व्यवसाय छोड़कर दूसरे व्यवसाय अपना लिये। इस सम्बन्ध में परमेश्वरीलाल गुप्त का मत है कि कवि शिल्पियों के विविध व्यवसायों का परिचय दे रहा है अथवा कहा जा रहा है कि दशपुर में रहने वाले विविध व्यवसाय करने वाले लोग थे। अभिलेख में कहीं ऐसा कुछ नहीं है जिससे समाज के अस्थिर स्वरूप की किसी प्रकार की कोई कल्पना की जा सके।

नगरों के विकास की अलग-अलग स्थितियाँ और कारण माने जा सकते हैं।[11] नगरीय विकास में भौगोलिक स्थिति का

---

1. ''दशपुर प्रथमं मनोभि:'' गुप्ता, परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग- 2, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी, 2002 ई., पृ0-102
2. गुप्ता, परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग- 2, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी, 2002 ई., पृ0-12, 38, 40 एवं 63
3. 'कृत्स्न पृथ्वी ज्यार्त्थे राज्ञेवैसहागत:, पूर्वोक्त, पृ0-40, पंक्ति-5
4. 'चतुस्समुद्रान्त विलोल मेखलां सुमेरू कैलास वृहत्पयोधराम्। वनान्त - वान्त स्फुटपुष्पहासिनी, कुमार गुप्ते प्रिथिवीं प्रशासति।' पूर्वोक्त, पृ0-107, पंक्ति-23
5. शर्मा, रामशरण, अर्बन डिके इन इण्डिया, मुंशीराम मनोहर लाल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1987 ई. पृ0-8
6. पूर्वोक्त, पृ0-8
7. फ्लीट, जे, एफ, कार्पस इंस्कृप्शन् इंडिकेरम, भाग-3, सम्पादन- डी. आर. भण्डारकर, इपीग्राफिकल पब्लिकेशन आफ ए.एस.आई., नई दिल्ली, 1981 ई. पृ0-79
8. गुप्ता, परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग- 2, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी, 2002 ई., पृ0-107
9. पूर्वोक्त, पृ0-107
10. पूर्वोक्त, पृ0-107, पंक्ति-16
11. विद्यानाथन, सुनील, ग्रेटरीवर्स ऑफ इण्डिया, नियोगी बुक्स, पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2011 पृ0-109

विशेष महत्व है तथा इसमें भी नदियों का योगदान और भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भारत, मिस्र और सुमेरिया के आरम्भिक नगर नदियों के ही तट पर विकसित हुए। नदियों के द्वारा केवल पेयजल ही उपलब्ध नहीं कराया जाता है, वरन् कृषि, सिंचाई तथा आवागमन हेतु सुलभ व्यवस्था भी प्रदान की जाती है।[12] कुछ विद्वानों का मत है कि सिंचाई-सुविधाओं का नगरीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।[13] मध्यप्रदेश के प्राचीन नगरों का अध्ययन भी इस तथ्य का उद्घाटन करता है कि इन नगरों के विकास में नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कुमारगुप्त एवं बन्धुवर्मा के अभिलेख में दशपुर नगर का वर्णन करते हुए कहा गया है कि (यह नगर) चंचल लहरों वाली दो नदियों से घिरा हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानो उरोजवाहिनी प्रीति और रति नाम्नी पत्नियों से एकान्त में आलिंगित होता हुआ कामदेव का शरीर हो।[14] सम्भवत: यहाँ तात्पर्य शिवना और सुमली नाम्नी नदियों से है। मन्दसौर स्थित दशपुर, शिवना नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ है। सुमली, नगर के उत्तर पूर्व लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर शिवना में गिरने वाली नदी है।[15] इन दोनों नदियों ने नगर की सुरक्षा हेतु एक ओर प्राकृतिक परिखा की भूमिका का निर्वाह किया होगा वहीं दूसरी ओर इस नगर के विकास में अन्य अनेक दृष्टिओं से भी योगदान दिया होगा।

मन्दसौर अभिलेख में उल्लेख है कि यह दशपुर उन्मत गजराजों के गण्डस्थल से चूते हुए मद-जल से सिचिंत चट्टान वाले सहस्त्रों पर्वतों से भूषित है।[16] इस वर्णन में वत्सभट्टि ने मन्दसौर क्षेत्र में अरावली तथा विन्ध्यपर्वत की श्रृंखला को दृष्टिगत रखा होगा, जो क्रमश: उत्तर पश्चिम एवं दक्षिण-पूर्व में फैली है। इन पर्वत श्रेणियों ने नगर की सुरक्षा में जहां एक ओर सहायता प्रदान की होगी, वहीं इन पर्वतों से प्राप्त शिलाफलकों का उपयोग भवन-निर्माण में हुआ होगा। मार्कण्डेय पुराण में इस क्षेत्र की गणना पर्वतीय देशों में की गई है। पर्वतीय क्षेत्र के साथ ही यह नगर वनों से आच्छादित था। इस नगर के वर्णन में गजराजों तथा पुष्पभार से झुके हुए वृक्ष-समूहों का उल्लेख इस तथ्य को उजागर करता है।

दशपुर से होकर तत्कालीन युग के महत्वपूर्ण व्यापारिक पथ भी जाते थे। नगर के इस प्रकार की भौगोलिक स्थिति नें इस नगर को व्यापारिक केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित होने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया होगा। व्यापारिक पथों पर स्थित होने के कारण यहाँ वाणिज्य और व्यवसाय का अभूतपूर्व विकास हुआ, जिससे आकृष्ट होकर शिल्पी लाट प्रदेश को छोड़कर यहाँ आकर बसे थे, जिससे इस नगर में व्यावसायिक सम्भावनाओं के आधिक्य का सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

दशपुर नगर के वर्णन में प्रशस्तिकार पर समकालीन अन्य कवियों की रचनाओं का प्रभाव लक्षित होता है। दशपुर का जिस रूप में वत्सभट्टि ने वर्णन किया है, उस पर स्पष्टत: कालिदास के अलका वर्णन की छाया है।[17] इस नगर का निर्माण योजनाबद्ध रूप से हुआ था। इसकी झीलों में कमल खिले थे तथा उनमें कारण्डव पंछी तैरते थे। तट पर स्थित वृक्षों एवं पुष्पों के कारण झीलों का पानी रंग-बिरंगा दिखाई पड़ता था। इस नगर के सरोवरों में राजहंस तैरते हुए दृष्टिगोचर होते थे, जिनका शरीर कमल की पंखुड़ियों के पराग से भूरा हो गया लगता था तथा अन्यत्र कमल अपने पराग के कारण झुक गये दिखाई देते थे। यहाँ की सुन्दर वाटिकाओं में वृक्ष पुष्पभार से अवनत थे। मतवाले भौरों की गुन्जन तथा नगर-वधुओं के ललित पद्गति से नगर की शोभा द्विगुणित हो उठती थी। इन प्रकार यह नगर झील, सरोवरों और उद्यानों से युक्त था। ये झील, सरोवर नगर की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही नगर की श्रीवृद्धि भी करते थे। नगर के भवन नगर-पथों के दोनों ओर पंक्तिबद्ध रूप से बने रहे होंगे। इन भवनों पर पताकायें लहराती थीं। उच्च अट्टालिकाओं तथा उनमें रहने वाली कोमल स्त्रियों के द्वारा नगर का सौन्दर्य बढ़ गया था। जिस समय इन उच्च भवनों पर विद्युल्लता का प्रतिबिम्ब पड़ता था, उस समय उनकी कान्ति अनुपम हो जाती थी। ये अट्टालिकायें अपनी अतिशय ऊँचाई के कारण कैलाश पर्वत का स्मरण कराती थीं। यहां के उद्यानों में कदली-द्रूम शोभायमान थे। यहां के भवन सुन्दर चित्रों से अलंकृत थे तथा उनमें संगीत की प्रतिध्वनि सुनाई देती थी। रात्रि के समय चन्द्रमा की किरणों से सुशोभित इन भवनों के अनेक तलों को देखने से ऐसा लगता था, मानो वे पृथ्वी को फाड़कर उपर उठे विमानों की पंक्ति हों।[18] दशपुर के इस प्रकार के वर्णन से नगर-वास्तु के विविध अंगों, भवन-विन्यास तथा चित्र और संगीत जैसे ललित कलाओं का परिचय मिलता है। जिससे उस युग के लोगों में कला के प्रति सुरूचिता का भान होता है। यहाँ के नागरिकों में धैर्य, सत्य, स्वाध्याय, कुशाग्र-बुद्धि, तप,

12. पूर्वोक्त, पृ0-110
13. ठाकुर, विजयकुमार, अर्बनाइजेशन इन ऐश्येन्ट इण्डिया, अभिनव पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2003 ई. पृ0-60
14. गुप्ता, परमेश्वरी लाल, प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख भाग- 2, पूर्वोक्त पृ0-107, पंक्ति-13
15. पूर्वोक्त पृ0-107 (पादटिप्पणी)
16. पूर्वोक्त, पृ0-107 पंक्ति-06.
17. पूर्वोक्त, पृ0-110, दूसरा पैरा
18. ''प्रासादमालाभिरलंकृतानि धरां विदार्य्यैव समुत्थितानि। विमानमालासदृशानि यत्र गृहाणि पूर्णेन्दु करामलानि।'' पूर्वोक्त, पृ0-103, पंक्ति-12

क्षमा, शम, व्रत आदि सराहनीय गुण थे।[19]

अभिलेख से दशपुर नगर में विविध व्यवसायों के प्रचलन एवं शिल्पियों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इसमें प्रमुख रूप से जो व्यवसाय प्रचलित थे, उनमें कर्णप्रिय संगीत के गायक, धनुर्विद्या में पारंगत धनुर्धारी, कथावाचक, धार्मिक प्रसंगों के वाचक, मृदु एवं हितकारी वचनो को बोलने वाले, तन्तुवाय, ज्योतिष-विद्या में निष्णात, युद्धकुशल तथा शत्रु के विनाश में कुशलता-प्राप्त व्यक्ति और शिल्पी विशेष महत्व के थे।[20] इसके साथ ही साथ स्वर्णकार, मालाकार, ताम्बूल-विक्रेता, नगर-नियोजक आदि की भी जानकारी मिलती है।[21] विभिन्न व्यवसायों के विवरण देने वाली अभिलेखीय पंक्ति 16-18 का फ्लीट ने जिस रूप में अनुवाद प्रस्तुत किया है, उससे ऐसा आभास होता है कि लाट देश से आने वाले लोगों ने दशपुर आकर अपने व्यवसाय बदल लिए थे, लेकिन परमेश्वरीलाल गुप्त के अनुसार उक्त पंक्तियों में शिल्पियों का सामान्य रूप से परिचय है। व्यवसाय बदलने जैसी कोई बात नहीं है। रामशरण शर्मा लाट छोड़कर शिल्पियों के दशपुर आगमन तथा व्यवसाय-परिवर्तन को विदेशी व्यापार में ह्रास तथा नगरीकरण के ह्रास का एक महत्वपूर्ण कारण निरूपित करते हैं। अभिलेख से ज्ञात होता है कि नगर में रेशम-व्यापारियों के मध्य कठिन प्रतिस्पर्धा विद्यमान थी। यही कारण है कि इस अभिलेख के माध्यम से तन्तुमय लोगों को अपने उत्पाद के विज्ञापन की आवश्यकता प्रतीत हुई होगी। अभिलेख के माध्यम से विज्ञापन का यह पहला महत्वपूर्ण उल्लेख है, जिसके अनुसार सौन्दर्य से सम्पन्न एक तरूणी, सोने के हार, ताम्बूल और पुष्पाभरणों से प्रसाधित होने पर भी तब तक परम शोभा को प्राप्त नहीं कर पाती थी, जब तक वह रेशम के बने युगल वस्त्रों को धारण नहीं कर लेती थी।[22] व्यवसाय में विज्ञापन के महत्व का प्रतिपादन और आरम्भ इसी अभिलेख से होता है। व्यवसायियों के गुणों को भी अभिलेख में उल्लिखित किया गया है, जो उनके व्यावसायिक कुशलता से सम्बन्धित कहा जा सकता हैं। वस्तु-विक्रय में व्यवहारशीलता का महत्वपूर्ण स्थान है, जिनसे आकृष्ट होकर ग्राहक क्रय करने आते थे। इन व्यवसायियों को राजाश्रय और सम्मान भी प्राप्त था। इस प्रकार दशपुर के नगर-जीवन में व्यवसायी अपनी वस्तुओं के विक्रय के प्रति जागरूक थे। दशपुर नगर तत्कालीन युग का महत्वपूर्ण व्यावसायिक केन्द्र था तथा व्यवसाय का इसके नगरीकरण तथा बहुविध वृद्धि-समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान था।

दशपुर के नगरीकरण में राजसत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वह गुप्त और गुप्तोत्तर कालीन सत्ता का प्रमुख अधिष्ठान था। इस नगर की राजनीतिक महत्ता का ज्ञान यहाँ से प्राप्त अनेक अभिलेखों से होता है। अभिलेख से गुप्त शासक कुमार गुप्त के साम्राज्य और शासन का परिचय मिलता है। इसके साथ ही यहाँ के गोप्ता विश्ववर्मा और उनके पुत्र बन्धुवर्मा का उल्लेख मिलता है। इस स्थानीय प्रशासकों की गुण-ग्राहता एवं शिल्प-संवर्द्धनशीलता से आकृष्ट होकर शिल्पी दशपुर आने के लिए आकृष्ट हुए तथा इस कारण से उन लोगों ने यात्रा की असुविधाओं और कठिनाइयों की ओर ध्यान नहीं दिया। उदयनारायण राय ने दशपुर के नगरीय महत्व और समृद्धि का प्रमुख कारण इसका सत्ता-अधिष्ठान होना बतलाया है।[23]

तद्युगीन समाज को धर्म की ओर प्रेरित करने वाला एक दार्शनिक दृष्टिकोण था कि जीवन नश्वर है। धन, यश तथा सांसारिक लोभों की क्षणभंगुरता प्राचीन काल से मनुष्य की धार्मिक प्रेरणा का स्रोत रही है। निर्माण-कार्यों के माध्यम से कीर्ति बनाये रखने की भावना प्राचीन अभिलेखों में परिलक्षित होती है। चन्द्र के मेहरौली अभिलेख में कीर्ति के माध्यम से मृत्यु के बाद भी पृथ्वी पर स्थित रहने की भावना का परिचय मिलता है।[24] यह भावना दशपुर अभिलेख में भी विद्यमान है, यथा - ''विद्याधर के वायु-चलित सुन्दर पल्लव कर्णफूल के समान इस संसार को क्षणभंगुर समझकर और अपने अपार धनसंग्रह को ध्यान में रखकर इन शिल्पियों ने अपने मन में एक हितकारी दृढ़ निश्चय किया। इसके ही परिणामस्वरूप तन्तुवाय लोगों ने दशपुर में सूर्य के विस्तीर्ण तुंग शिखरों से युक्त मन्दिर का निर्माण करवाया जो पश्चिम (दशपुर) में चूड़ामणि की तरह शोभायमान था। कुछ समयोपरान्त मन्दिर का एकभाग गिर गया तब अपनी कीर्ति को बढ़ाने के लिए उदार श्रेणी ने इस सम्पूर्ण विशाल सूर्य-मन्दिर का संस्कार कराया।'' जीर्णोद्धार के बाद यह मन्दिर अपने ऊँचे, स्वच्छ और सुन्दर शिखरों से आकाश को स्पर्श करते हुए से आभास के कारण चन्द्रमा और सूर्य के उदयकालीन निर्मल किरणों की विश्राम-स्थली प्रतीत होता था।[25]

19. 'सत्य-क्षमा-दम-शम-व्रत-शौच-धैर्य-स्वाध्याय-वृत-विनय-स्थिति-बुद्ध युपैतैः।' पूर्वोक्त-पृ0-103, पंक्ति-13
20. पूर्वोक्त, पृ0-103, पंक्ति-15
21. पूर्वोक्त, पृ0-103, पंक्ति-16।
22. ''तारूण्य-कान्त्युपचितोऽपि सुवर्ण्ण-हार-तांबूल-पुरूष विषिना समलंकृतोऽपि। नारीजनः श्रियमुपैति न तावदग्रयं यावन्न पट्टमय वस्त्र युगानि धत्ते।'' पूर्वोक्त, पृ0-104, पंक्ति-20
23. राय, उदय नारायण, प्राचीन भारत में नगर और नगर जीवन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010 ई., पृ0-199
24. ''खिन्नस्येव विसृज्यगां नरपतेर्गामाश्रितस्येतरां मूर्त्या कर्म्म-जिताबनि गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ'', गोयल, श्रीराम, गुप्तकालीन अभिलेख, कुसुमांजलि प्रकाशन मेरठ, 1984 ई., पृ0-78
25. ''अत्युन्नतमवदातंनमः स्पृशन्निव मनोहरैश्शिखरैः शशि-भान्वोरभ्युदयेष्वम ल-मयूखायत्मभूतं '', गुप्ता, परमेश्वरीलाल, पूर्वोक्त, पृ0-105

(शेष पृष्ठ 68 पर)

भर पशुओं का शिकार करते हैं। श्रद्धा प्रतिरोध करते हुए कहती है-

दिन भर थे कहाँ भटकते तुम बोली श्रद्धा भर मधुर स्नेह
यह हिंसा इतनी प्यारी है जो भुलवाती है देह-गेह।
चमड़े उनके आवरण रहें, ऊनों से मेरा चले काम।
वे जीवित हो मांसल बन कर, हम अमृत दुहें, वे दुग्ध धाम।[21]

नारीसौन्दर्य उस व्यापक सौन्दर्य का एक अंगमात्र है, जो सम्पूर्ण प्रकृति में बिखरा हुआ है। कालिदास एवं प्रसाद दोनों ही प्रारम्भ से प्रकृति के प्रेमी रहे हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति का बहुविध चित्रण किया है। कामायनी मे हिमालय, समुद्र, रात्रि, संध्या आदि का बहुत ही प्रभावकारी एवं स्मरणीय चित्रांकन हुआ है। मेघदूत और कुमारसम्भवम् हिमालय के सुन्दर चित्रों के धनी है। कामायनी से हिमालय का एक चित्र प्रस्तुत है-

छूने को अम्बर मचली सी बढ़ी जा रही सतत् ऊँचाई।
विक्षत उसके अंग प्रगट थे भीषण खड्ड भयंकारी खाई।
रविकर हिमखंडों में पडकर हिमकर कितने नये बनाता,
दुततर चक्कर काट पवन भी फिर से वहीं लौट आ जाता।[22]

वस्तुत: अभिज्ञानशाकुन्तलम् और कामायनी दोनों ही सृष्टियाँ आशा और प्रमोद के वातावरण से प्रारम्भ होकर नियति के गम्भीर प्रवाह में प्रविष्ट होती हुई प्रतीत होती है और फिर एक अद्भुत प्रत्यभिज्ञा से परिचालित होकर स्वर्गीय आनन्द की भूमिका पर पहुंचती है। दोनो कवियों के काव्य में सौन्दर्य का चित्रण जितना आदर्शवादी हुआ है, प्रेमाभिव्यक्ति भी उतने ही आदर्शवादी धरातल पर हुई है। दोनों की ही भूमिका उदात्त है। इस उदात्तवृत्ति ने प्रसाद एवं कालिदास को ऐसी सूक्ष्म सौन्दर्य दृष्टि दी है कि उन्होंने नारी के चटकीले रंगों के साथ ही सूक्ष्म रेखाओं और वर्णच्छाटाओं चित्रांकन में भी सफलता प्राप्त की है। इसी उदात्तवृत्ति के कारण उन्हें प्रेम की बारीक से बारीक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की शक्ति मिल गई। परिणामत: वे प्रेम का ऊँचा आदर्श प्रस्तुत कर सके। हम यह कह सकते हैं कि दोनों ही महाकवि सौन्दर्य-चित्रण की अपनी प्रतिभा में महान, अप्रतिम और अपराजेय हैं।

21. कामायनी, पृ0-68, जयशंकर प्रसाद, जनवाणी प्रकाशन प्रा. लिमिटेड्, 2009

22. कामायनी, पृ0-31, जयशंकर प्रसाद, जनवाणी प्रकाशन प्रा. लिमिटेड्, 2009

◆◆◆

(पृष्ठ 50 का शेष) दशपुर नगर (कुमार गुप्त और......

दशपुर में प्राप्त अभिलेख और पुरातात्त्विक स्मारक इस नगर की धार्मिक स्थिति के अध्ययन की पर्याप्त सामग्री प्रदान करते हैं। इनके अध्ययन से इस नगर में शैव, शाक्त, वैष्णव, सौर्य, बौद्ध एवं जैन धर्मो के अस्तित्व का परिचय मिलता है। इसके साथ ही धार्मिक समरसता और समन्वय का भी ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार की धार्मिक गतिविधियों ने भी इस नगर के बहुविध विकास में अपना योगदान दिया होगा।

नगरों का ह्रास भारतीय इतिहास की एक विवादास्पद समस्या है। विद्वानों ने नगरों के ह्रास के लिए कई कारणों को उत्तरदायी माना है, जिनमें राजनीतिक अस्थिरता विदेशी आक्रमण, प्राकृतिक आपदा और भारत का रोमन साम्राज्य से व्यापार का ह्रास प्रमुख है। इसी प्रकार से दशपुर के ह्रास के लिए राजनीतिक कारण, व्यापार का ह्रास और आक्रमणों, विशेषकर बाह्य आक्रमण ाों को भी उत्तरदायी माना जा सकता है। यद्यपि उस आक्रमण से, जिससे कि मन्दिर क्षतिग्रस्त हो गया था, इस नगर के आर्थिक गतिरोध का अनुमान सहज की किया जा सकता है।

◆◆◆